• कविताएं...

## याददाश्त...

*हम उस दौर में है*
*जब सिकुड़ने*
*लगती है याददाश्त*
*और*
*असंख्य शाप*
*पीछा करते है*
*तब कितना*
*आसां होता है*
*पलट कर विस्मृति*
*का एलबम खोल*
*बिना जोखिम के*
*कहीं पर भी*
*कंपकपाती ऊंगली धर*
*धीमे शब्दों में बोलना,*
*हर नई भूलभुलैया में भी*
*जीवन के बीहड़ में*
*बहुत कुछ छूट*
*जाने का पछतावा*
*हमेशा*
*ठीक से याद रहता है ।*

■ अंजना टंडन

## मुखौटा...

*रे मन !*
*मान भी*
*कितने लगाएगा मुखौटे*
*जहां जाता है ,*
*पास होता है जिसके*
*एक*
*नया मुखौटा*
*चढ़ा लेता है।*
*छिः !*
*किसी दिन*
*मुखौटे ने*
*विद्रोह कर दिया*
*सोच क्या होगा?*
*बहुत हो गया*
*मुखौटे पर मुखौटा रखे*
*अब*
*मेरा कहना*
*मान भी जा*
*मेरे मन।*

■ मनोज तिवारी

• कहानी/–पद्मा सचदेव (डोगरी कहानी)

# आधा कुआं

**गतांक से आगे...**

मेरे भी दूसरे ने दुकान खोल ली है। उसकी छीटें लेने तो चोरी-छिपे हिंदोस्तान से भी औरतें आती हैं।'

'देख रज्जो, एक कमीज का कपड़ा मेरे लिए फड़वा लाना। पिछले साल की एक सुत्थन पड़ी है, उसके साथ कुरता नहीं है। मोतिया रंग पर लाल छापा हो तो खूब बनेगी।'

'सोमा, मैं खुद दुकान पर जाकर अपनी पसंद के छाप की कमीज फड़वा लाऊँगी। कुरता तो तुम्हें मेरा जीजा खूब फिटिंगवाला सी देगा।'

दोनों हँसने लगीं।

लड़ाई खत्म होने पर वैसे ही एक-दूसरी तरफ के लोग मिल जाते थे जैसे दूध और पानी। फिर सब वही जीने के अंदाज शुरू हो जाते।

1965 की लड़ाई में कुएँ पर एक बार सन्नाटा छा गया। फौजियों की आवाज के डर से कोई पानी भरने न आती। फौजी ट्रकों में पानी लाद-लादकर छावनियों में पहुँचाते रहते। लड़ाई की वजह से आरपार होने वाले सब रिश्तेदारों की शादियाँ रुक जातीं। लड़ाई का झमेला हटते ही पार का फकीरा अपने सगे भाई मुहम्मद के घर बरात ले गया। लड़ाई के बाद यह पहला खुशगवार वाकया था। वहीं शादी में सोमा और रजिया मिलीं तो एक-दूसरी के गले लग गई। लड़ाई के बाद दोनों के बच्चे सही सलामत थे।

रजिया ने रोते-रोते कहा, 'अल्लाह का शुक्र है, मेरा बच्चा जंग से जीता-जागता लौट आया।'

'शुक्र है रजिया, तेरा भाँजा भी सही सलामत वापस लौटा है। मुओं ने इसके पाँव पर गोली चलाई थी। वह तो जानो बूट बड़ा पक्का था, उसी के ऊपर से होकर निकल गई। मैं कल ही पंजपीर में नियाज देकर आई हूँ।'

पंजपीर हिंदोस्तान में था। रजिया ने कहा, 'सोमा, मन्नत तो मैंने भी वही मानी हुई है। अब किसी दिन गश्त कम होगी तो दे आऊँगी। मुझे जम्मू से खरीदारी भी करनी है।'

'पता नहीं रजिया कब लड़ाइयाँ खत्म होंगी। हमारी जिंदगी इसी डर में बीत जाएगी। पता नहीं।'

'हाँ, अब हम दादी-नानी हो गई हैं। पता नहीं कितने दिन के और हैं। इधर-उधर मारकुटाई न हो तो पता ही नहीं चलता, दो मुल्क हैं।'

'पता तो तब चले, जब हम अलग हों। हमारे सुख-दुःख साझे हैं। हमारी गरीबी एक है। हम इकट्ठे जवान हुए, इकट्ठे ही बूढ़े हो रहे हैं। तुम्हें क्या बताऊँ, अब आँखों से ठीक सुझाई नहीं देता। इतनी बार लड़कों का बाप शहर में आँख वाले डॉक्टर को दिखाने के लिए कहता है, फिर भूल जाता है। उसकी अपनी आँख भी खराब है।'

'आँखें तो हमारी भी खराब हैं। लड़ाई बंद हो तो मैं भी तुम्हारे डॉक्टर के पास ही चलूँगी। सुना है, बड़ा सयाना डॉक्टर है।'

'कुछ दिन रुको, फिर इकट्ठे चलेंगे। अच्छा, मैं चलती हूँ।' रजिया ने घुटनों पर बोझ डालकर उठते हुए कहा।

'सोमा, नया सत्तू निकला है, तेरे लिए ले आऊँगी। अपने बुड्ढे को भी पिला देना।'

कुएँ पर रौनक लगनी फिर शुरू हो गई। कोई नई बहुओं को कुआँ पूजने लाती तो सामनेवालियों को भी बताशे बाँटते। खूब रंगीन हो जाता कुआँ। उसका पानी बरतनों के डूबने से काँपता रहता। कभी-कभी कोई बरतन, किसी की चाबियाँ, कुएँ में से सामान निकालनेवाले यंत्र पर डालकर निकाले जाते। बरतनों पर झगड़ा होता।

**'अरी सोमा, मेरी तो मुमानी सास वहाँ रहती है। मैं भी चलूँगी। हम दोनों उन्हीं के घर रहेंगे। बड़े खानदानी लोग हैं। एक बार मुमानी ने मुझे घी की पीपी भी भेजी थी। जब जुड़वाँ हुए तो किसी ने बता दिया होगा।' 'चलो अच्छा हुआ, कहीं माँ-जाए भी बिछड़ते हैं!'**

**अब बेरी के दरख्त के नीचे सिर्फ कुजराँवाले की बात होती थी। एक दिन सोमा ने शरमाते हुए कहा, 'कुजराँवाले में एक हलवाई की दुकान थी...**

'यह पाकिस्तान की बालटी है।'

'ये बटलोई हिंदोस्तान की है।'

पर पानी दोनों में एक रहता। जैसे आसमान दोनों का था। उस पर कोई लड़ाई न होती थी। इसके बावजूद सीमा पर छुटपुट वारदातें होती रहती थीं। इसका अभ्यास दोनों को था। इस पर कभी-कभी बहस भी होती, पर ज्यादातर इस तरह की बात कोई न करना चाहता। शाम से सुबह तक खूब चौकसी रहती, तब कुआँ सूना-सूना पड़ा रहता।

फिर सुनने में आया, हिंदोस्तान-पाकिस्तान में बस चल पड़ी है। रजिया ने पत्थर पर बैठते हुए कहा, 'ऐ सोमा, यह बस चलने की क्या अफवाह है?'

'यह अफवाह नहीं है। हमारे प्रधानमंत्री बस लेकर पाकिस्तान गए हैं। रास्ता खुल गया है, इसलिए एक बार जाकर कुजराँवाले (पाकिस्तान में एक शहर) में अपना घर देखना चाहती हूँ।'

'अरी सोमा, मेरी तो मुमानी सास वहाँ रहती है। मैं भी चलूँगी। हम दोनों उन्हीं के घर रहेंगे। बड़े खानदानी लोग हैं। एक बार मुमानी ने मुझे घी की पीपी भी भेजी थी। जब जुड़वाँ हुए तो किसी ने बता दिया होगा।'

'चलो अच्छा हुआ, कहीं माँ-जाए भी बिछड़ते हैं!'

अब बेरी के दरख्त के नीचे सिर्फ कुजराँवाले की बात होती थी। एक दिन सोमा ने शरमाते हुए कहा, 'कुजराँवाले में एक हलवाई की दुकान थी, पता नहीं अब है या नहीं! मैं सुबह दही लेने जाती थी तो हलवाई का बेटा मलाई से दोना भर देता था। पता नहीं अब वह कहाँ होगा?'

रजिया ने कहा, 'अरे, वहीं होगा। जाओगी तो मलाई का दोना लेकर बैठा मिलेगा।'

रजिया के हाथ पर पंखा मारकर सोमा ने कहा, 'चल कमीनी कहीं की, शर्म नहीं आती। अरे, अब वे दिन कहाँ रहे। हम साथ-साथ बड़े हो रहे थे, जिंदगानियाँ बिछी हुई थीं। खाली वहाँ तक पहुँचना ही था कि यह मुआ पाकिस्तान बन गया।'

'मुई गाली तो मत दो। बाकी बँटवारे में तो हमारी रजामंदी न थी।'

'तुम्हें पूछने कौन सा बाप आया था। हम तो परजा हैं। बँटवारे के फैसले तो राजा लोग करते हैं।'

'हमने सरहद पर रहकर हमेशा मार-कुटाई ही देखी है सोमा, हर वक?त धड़का लगा रहता है।'

'चलो, अब तो लड़ाई खत्म हो जाएगी। रहना न मिले तो भी सब अपनी-अपनी जन्मभूमि देख आएँगे।'

फिर एक शाम जोर के गोले फटने से कुएँ पर जिंदगी थम गई। पानी भरने आईं औरतें अपने-अपने बरतन उठाए अपने घरों को भाग गईं। कइयों ने घड़े वहीं पटक दिए और अपने बच्चों को छाती से लगाकर भागीं। रजिया ने उठते हुए कहा, 'अल्लाह, मेरे हबीब को बख्शना।'

सोमा ने कहा, 'मेरा मोहन भी मिलिटरी में हैं। भगवान? उसकी रक्षा करना।'

आसमान की छाती को चीरते जहाज, जमीन की चुप्पी को दो फाड़ करते गोले; बस यही रह गया था। कितने दिन हो गए, कुएँ पर कोई नहीं गया।

सोमा के बेटे की बुरी खबर आ गई थी।

कुआँ पूरा भर गया था। उस पर एक बुत्ती सलीब की तरह खड़ी थी। सोमा ने अपनी आँखों को अपने आँचल से पोंछकर उसे देखा, फिर कहा, 'मेरा मोहन मर गया है। मेरा कुआँ भी मर गया है। रजिया का हबीब ही कहाँ बचा होगा!'

**-समाप्त**

• शायरी...

*कुछ हिज्र के मौसम ने सताया नहीं इतना*
*कुछ हम ने तेरा सोग मनाया नहीं इतना*
*कुछ तेरी जुदाई की अज़िय्यत भी कड़ी थी*
*कुछ दिल ने भी ग़म तेरा मनाया नहीं इतना*

◆ ◆ ◆

*क्यूं सब की तरह भीग गई हैं तेरी पलकें*
*हम ने तो तुझे हाल सुनाया नहीं इतना*
*कुछ रोज़ से दिल ने तेरी राहें नहीं देखीं*
*क्या बात है तू याद भी आया नहीं इतना*

◆ ◆ ◆

*क्या जानिए इस बे-सर-ओ-सामानी-ए-दिल ने*
*पहले तो कभी हम को रुलाया नहीं इतना*

*-'अदीम' हाशमी*

◆ ◆ ◆

*मिरा खत दे के नामाबर ने इतना कह दिया उनसे*
*लिखेंगे अब वो इस खत का जवाब*
*आहिस्ता-आहिस्ता*
*जनाब-ए-शेख तो फ़तवे ही देते रह गए मूसा*
*मगर मैं हो गया गर्क-ए-शराब*
*आहिस्ता-आहिस्ता*

• खुलेगी ज़िन्दगी की अब किताब

*खुलेगी ज़िन्दगी की अब किताब*
*आहिस्ता-आहिस्ता*
*बहुत हम पी चुके यारों शराब*
*आहिस्ता-आहिस्ता*
*मैं हूं मसरूफ़ पीने में न कर ज़ल्दी तू ऐ साक़ी*
*मिली फ़ुर्सत तो कर दूंगा हिसाब आहिस्ता-आहिस्ता*
*किया रुस्वा सरे बाज़ार उसने और फ़रमाया*
*इसे होना ही था खाना ख़राब आहिस्ता-आहिस्ता*

*-मोहम्मद मूसा खान अशान्त*